दिनांक - 07.04.2021

पत्र : अष्टम / साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना

काव्य प्रयोजन का शेष - - - -

हिन्दी के रीतिकाव्य में दरबारी काव्य के मूल्यों का पोषण हुआ। इस काल के कवि श्रृंगारिकता और झूठी शास्त्रीयता का पल्ला पकड़े रहे। भोग, केलि-क्रीड़ा-विलासपूर्ण मनोरंजन कविता का मूल उद्देश्य था। बिहारी के इस दोहे में रीतिकाल का संपूर्ण जीवन दर्शन समाहित है —

"तजि तीरथ हरि-राधिका तन दुति करु अनुराग।
जेहि ब्रज केलि निकुंज मग पग-पग होतु प्रयाग॥

जिस कारण इस काल में श्रृंगार-रस को रसराज का दर्जा प्राप्त हुआ। मूलतः यह कलाकाल है क्योंकि इस काल के अधिकतर कवि बिहारी-देव-मतिराम-घनानंद आदि रसवाद के पोषक हैं। ये सभी कवि कम, रसिक अधिक हैं।

आधुनिक काल आते-आते ईश्वर की धारणा व्यक्तिगत जीवन का हिस्सा बन गयी। मनुष्य की अवधारणा में परिवर्तन आया। यह भारतीय समाज के नवजागरण का काल था। जिसके मूल में पराधीनता मुख्य कारण थी। अंग्रेजी साम्राज्यवादी के विरुद्ध विरोध, विक्षोभ, विद्रोह और बगावत ही काव्य का प्रधान उद्देश्य बन गया।

हिन्दी साहित्य में सरस्वती पत्रिका धुरी के समान भूमिका निभाई। कोई भी चर्चा सरस्वती पत्रिका के बगैर अधुरी है। इस पत्रिका के माध्यम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने रीतिवाद का विरोध किया। समाज में जागृति लाने वाली रचनाओं को प्राथमिकता दी। द्विवेदी जी की प्रेरणा से मैथिलीशरण गुप्त ने भी रीतिवाद-विरोधी अभियान में हिस्सा लिया और उनने अपने काव्य प्रयोजन का मुख्य विषय राष्ट्रीय जागरण को बनाया। उन्होंने कहा है —

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥"

अर्थात संपूर्ण द्विवेदी-युगीन कविता में काव्य का प्रयोजन लोकमंगल की भावना ही है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी रीतिवादी ओढ़ोलन के विरोध का समर्थन किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने काव्य का प्रयोजन 'लोक-चिंता' को घोषित किया। उनके प्रिय कवि हैं — कबीर। उन्होंने कबीर के काव्य प्रयोजन का पूर्णत: समर्थन किया है।

डॉ० नगेन्द्र एक रसवादी आचार्य हैं। वे काव्य का प्रयोजन अभिव्यक्तिवाद को मानते हैं। साथ ही रस को काव्य-प्रतिमान भी मानते हैं। जयशंकर प्रसाद ने रस की शैवाद्वैतवादी - आनंदवादी परंपरा का समर्थन किया है। साथ ही निराला का संपूर्ण काव्य प्रयोजन 'नवजागरण' के मूल्यों से अनुप्रमाणित है। निराला और प्रसाद की चिन्तन राह को ही महादेवी वर्मा ने भी समर्थन दी की है।

हिन्दी में 'प्रगतिवाद' ने रूढ़िवाद का विरोध करते हुए मार्क्सवादी समाज-चिंतन को काव्य का उद्देश्य बनाया। प्रयोगवादी युग, नयी कविता तथा समकालीन युग में साहित्य चिंतकों की एक पूरी पीढ़ी है जो 'व्यक्ति-स्वातंत्र्य', 'लघुमानव सिद्धांत' में विश्वास करती है। लेकिन इस पीढ़ी को कलावादी - रूपवादी - भाववादी - प्रतिक्रियावादी, यौन युद्ध के मूल्यों के प्रचार की पीढ़ी कहना एकदम गलत है। इसमें अधिकांशत: प्रजातंत्रवादी - समाजवादी चिंतन को मानने वाले रचनाकार हैं। इस कालखण्ड के कवियों का काव्य प्रयोजन मुख्य रूप से मानव व्यक्तित्व का समग्र विकास, मानव स्वाधीनता की रक्षा, मुक्त चिंतन का विकास है। अज्ञेय, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, रामस्वरूप चतुर्वेदी जैसे कवि इस काव्य प्रयोजन का समर्थक हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि काव्य का प्रयोजन देश काल परिस्थिति के अनुसार निर्मित और विघटित होता है फिर भी साहित्य का मूलत: उद्देश्य नवजागरण - लोकमंगल की भावना और जागृति ही है। चाहे वो आदि संस्कृत आचार्य, पाश्चात्य कवि-दार्शनिक या फिर हिन्दी के आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल के रचनाकार और आलोचक हो। कवि की सोच में उसका सामाजिक परिवेश हमेशा स्थित रहता है।